कक्षा नौवीं

मुहावरों के वाक्य

- 1. अंग-अंग मुसकाना (बहुत प्रसन्न होना) कक्षा में प्रथम आने पर उसका अंग-अंग मुसकरा रहा था।

- 2. अंगारे उगलना (कठोर बाते करना) वह तो अपने मुँह से हमेशा अंगारे उगलता रहता है।

- 3.अंधे की लकड़ी (एकमात्र सहारा) श्रवण अपने माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी था।

- 4. अकल चकराना (कुछ समझ में न आना) गणित का प्रश्न-पत्र देखते ही सुमन की अकल चकरा गई।

- 5. अक्ल के घोड़े दौड़ाना (तरह-तरह के विचार करना) ज़रा अकल के घोड़े दौड़ाओ, तभी इस मुसीबत से पार हो सकते हो।

कंचन वासन

मुहावरों के वाक्य

- 6.अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी प्रशंसा आप करना) - तुम्हें अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता।

- 7.आँखें चुराना (छिपना) - जबसे उसने मुझसे 5000/- रुपये उधार लिए हैं, वह मुझसे आँखें चुराता फिरता है।

- 8. आँखों पर बिठाना (सम्मान करना) जब श्री रामचन्द्र जी 14 सालों का वनवास काटकर अयोध्या वापिस आये तो लोगों ने उन्हें आँखों पर बिठा लिया।

- 9. आँख खुलना (होश आना) जब धीरे-धीरे रिश्तेदारों ने रमेश की सारी संपत्ति हथिया ली, तब कहीं जाकर उसकी आँखें खुली।

- 10. आँसू पीकर रह जाना (घोर मुसीबत पड़ने पर भी शाँत रहना/आँखों में आँसू न आने देना) भाई की घोर गरीबी को देखकर बहन आँसू पीकर रह गयी।

कंचन वासन

मुहावरों के वाक्य

- 11. आग-बबूला होना (बहुत गुस्सा होना) - परशुराम शिव धनुष को टूटा हुआ देखकर आग-बबूला हो उठे।

- 12. आग में पानी डालना (क्रोध को शांत करना/झगड़ा मिटाना) तुमने महेन्द्र और नरेश की लड़ाई में बीच-बचाव करके आग में पानी डालने का काम किया है।

- 13. आसमान टूट पड़ना (भारी मुसीबत आना) भयंकर बाढ़ में उसका घर बह गया, मानो उस पर आसमान टूट पड़ा हो।

- 14.आसमान सिर पर उठाना (शोर करना) अध्यापक जब कक्षा में नहीं थे तो बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

- 15. ईमान बेचना (बेईमानी करना) हमें किसी भी कीमत पर अपना ईमान नहीं बेचना चाहिए।

कंचन वासन

- 16. ईद का चाँद होना (बहुत कम या बहुत समय बाद दिखाई देना) अरे भाई!तुम तो ईद का चाँद हो गये हो।

- 17. कलेजा ठंडा होना (संतोष हो जाना) जब बेटे के हत्यारों को फाँसी की सज़ा सुनाई गयी, तब माँ का कलेजा ठंडा हो गया।
- 18.कलेजे पर साँप लोटना (ईर्ष्या से जलना) जब जगदीश सिंह दसवीं कक्षा में पूरे राज्य में प्रथम आया, तो संदीप के कलेजे पर साँप लोटने लगा।

- 19.कान का कच्चा (सुनते ही किसी बात पर विश्वास करना) - अधिकारी को कान का कच्चा नहीं होना चाहिए।

- 20. कान पर जूँ तक न रेंगना (कुछ असर न होना) -मैंने अपने छोटे भाई को बहुत समझाया, किन्तु उसके कान पर तक नहीं रेंगी।

प्रस्तुति:
कंचन वासन
हिंदी शिक्षिका
सरकारी कन्या हाई स्कूल
शाहकोट (जालंधर)